बी. एड. विद्यार्थी-शिक्षकों के अभ्यास-शिक्षण में शिक्षण कौशलों के प्रयोग के समय उत्पन्न समस्याओं का अध्ययन

तारकेश्वर गुप्ता*

शिक्षक शिक्षा महत्वपूर्ण कार्यक्रम है। शिक्षक शिक्षा में प्रायोगिक क्रियाओं के अंतर्गत अभ्यास-शिक्षण (इंटर्नशिप) का विशेष महत्व होता है तथा शिक्षण कौशलों का ज्ञान शिक्षा के प्रसार को गुणवत्ता प्रदान करता है। शिक्षण कौशलों का ज्ञान एवं विकास तथा वास्तविक परिस्थिति में प्रयोग शिक्षक की विशिष्ट योग्यता को प्रदर्शित करता है। इस शोध पत्र में विद्यार्थी-शिक्षकों में कौशल युक्त शिक्षा प्राप्त करने एवं अध्यापन कार्य में प्रवीण करने में आने वाली समस्याओं एवं तत्संबंधी तथ्यों पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। इस शोध अध्ययन की प्रकृति सर्वेक्षण थी। इसमें उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्शन विधि से चयनित प्रतिदर्श के रूप में महाराणा प्रताप राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हरदोई (उत्तर प्रदेश) में सत्र 2015–16 में अध्ययनरत बी. एड. के 65 विद्यार्थी-शिक्षकों को सम्मिलित किया गया था। उपकरण के रूप में शोधक द्वारा स्व-निर्मित अभ्यास-शिक्षण सूचना पत्र का प्रयोग किया गया था। जिसमें छह शिक्षण कौशलों के प्रयोग तथा उनके प्रयोग के समय उत्पन्न होने वाली कठिनाइयों से संबंधित प्रश्न थे। इस शोध अध्ययन में पाया गया कि विद्यार्थी-शिक्षकों को सर्वाधिक समस्या विद्यार्थियों द्वारा ही आती है, साथ ही शिक्षण वातावरण से भी समस्या उत्पन्न होती है। शिक्षण कौशलों के ज्ञान का अभाव तथा प्रयोग की पर्याप्त जानकारी का न होना भी समस्या उत्पन्न करता है। इन समस्याओं का मुख्य कारण प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षकों की कमी तथा नीतियों में व्यापक समन्वयता का अभाव पाया गया। इसका एक अन्य कारण संस्थानों के पास स्वयं के विद्यालय नहीं हैं, जहाँ व्यवस्थित तथा पूर्णकालिक प्रशिक्षण संपन्न कराया जा सके।

प्रस्तावना

"राष्ट्रीय अखंडता और एकता की भावना का महत्व; वैज्ञानिक दृष्टिकोण की आवश्यकता; अपने काम में उत्कृष्टता के लिए प्रतिबद्ध रहना और अपने समाज के लिए चिंतित होना" एक नये शिक्षक की अभिकल्पना होनी चाहिए, चट्टोपाध्याय आयोग (1983–85)। एक शिक्षक हमेशा अपने काम की उत्कृष्टता के लिए प्रतिबद्ध और अपने समाज के लिए चिंतित रहता है। उसे समय-समय पर उचित मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है, समाज किस दिशा में अग्रसर हो रहा है; उस पर उसकी दृष्टि रहती है। नये समाज की संरचना में नये लोगों की ही भूमिका होनी

* *असिस्टेंट प्रोफ़ेसर* (बी.एड.विभाग), महाराणा प्रताप राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हरदोई (उत्तर प्रदेश) 241 001

Chapter 11.indd 111 7/3/2018 4:59:41 PM

चाहिए, क्योंकि उन्हें ही उस समाज में रहना है तथा आने वाली पीढ़ी के लिए नये संस्कार देने हैं। शिक्षक बनने हेतु प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे विद्यार्थी-शिक्षकों में राष्ट्रीय अखंडता और एकता की भावना का संचार तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण को विकसित करना एवं शिक्षण कौशल सीखना आवश्यक है।

कोठारी आयोग (1964–66) ने शिक्षा में गुणात्मक सुधार के लिए शिक्षकों को बतौर पेशेवर तैयार करने पर बल दिया था। आयोग का मत था— "शिक्षक-शिक्षा को एक तरफ़ विश्वविद्यालयों की अकादमिक मुख्यधारा में और दूसरी ओर स्कूली जीवन तथा शैक्षिक विकास में लाने की बात पर ज़ोर दिया जाए।" वर्तमान शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम शिक्षकों को एक ऐसी व्यवस्था में समायोजित करने के लिए प्रशिक्षण देता है, जिसमें शिक्षा के बारे में यह समझा जाता है कि उसमें केवल सूचनाओं का प्रसार होता है। प्रचलित शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम में न तो नये विचारों को संदर्भ में लिया जाता है, न ही स्कूल और समाज से जुड़े मुद्दों की इसमें चर्चा हो पाती है। इसमें नये प्रकार के शैक्षणिक अनुभवों के लिए कोई जगह नहीं होती। शिक्षक-प्रशिक्षण के अनुभवों से पता चलता है कि उसमें ज्ञान को प्रदत्त की तरह बिना सवाल उठाए पाठ्यचर्या में बाँध दिया जाता है और उसे न तो विद्यार्थी-शिक्षकों द्वारा परीक्षण दिया जाता है, न ही किसी अन्य शिक्षक द्वारा।

समाज में समस्याएँ बहुत हैं जिनके निराकरण के लिए सामाजिक मूल्य, नैतिक मूल्य एवं राजनैतिक मूल्यों को आत्मसात् करने की आवश्यकता होती है। शिक्षक स्वयं में इन मूल्यों को धारित करता है तथा अपने धर्म का निर्वाह करता है। शिक्षक का धर्म देश काल की परिस्थितियों के अनुसार समाज के नागरिकों को तैयार करना तथा भावी संभावनाओं की खोज करना है। मनुष्य के जीवन को उन्नत बनाने के लिए शिक्षा ही एकमात्र साधन है। शिक्षा से मनुष्य अपने अस्तित्व, जीवन का उद्देश्य तथा सामाजिक संबंधों एवं जीवन मूल्यों को समझने में सक्षम हो पाता है। समाज की जटिलताओं, जीवन की उलझनों का समाधान करने के साधनों की खोज में शिक्षा सहयोग प्रदान करती है। शिक्षा के माध्यम से मनुष्य प्रकृति के उन रहस्यों को समझ पाता है जो उसके लिए आश्चर्य से कम नहीं होते, जिनको जानने और समझने में मनुष्य नये-नये आविष्कार करता आ रहा है। इन आविष्कारों ने मनुष्य को भौतिक सुविधाओं की उपलब्धता प्रदान की है।

शिक्षक बनने की प्रक्रिया में अध्ययनरत विद्यार्थी-शिक्षक, जो इस क्षेत्र में बिलकुल नये होते हैं और विभिन्न विषयों की पृष्ठभूमि से जुड़े होते हैं, जिन्हें नवीन विषय शिक्षा दर्शन, शिक्षा मनोविज्ञान, शिक्षा तकनीकी, शिक्षा का इतिहास, शिक्षा प्रबंधन इत्यादि का अध्ययन करना पड़ता है। इन सभी विषयों का ज्ञान एक शिक्षक को आवश्यक है, इन विषयों के अभाव में शिक्षक अध्यापन की पूर्णता को प्राप्त करने में असमर्थ है। उच्च शिक्षा का यह क्षेत्र अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस क्षेत्र की गुणवत्ता शिक्षा के सभी स्तरों को प्रभावित करती है। शिक्षक शिक्षा में सिद्धांत के अतिरिक्त प्रायोगिक स्थिति अत्यंत महत्वपूर्ण है, जिससे विद्यार्थी-शिक्षकों को विभिन्न चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

अभ्यास-शिक्षण के समय विद्यार्थी-शिक्षकों को अनेक कौशलों की प्रस्तुति करनी पड़ती है, विभिन्न कौशलों के विकास हेतु पाठ योजना का निर्माण करना होता है। जिसे विभिन्न शिक्षण बिंदुओं के सहयोग से विकसित किया जाता है। पाठ की प्रस्तावना के प्रश्न बनाना जो प्रत्येक विद्यार्थी-शिक्षक के लिए चुनौती होती है। प्रश्नीकरण कौशल में संपूर्ण पाठ योजना में विभिन्न प्रकार के प्रश्नों का निर्माण करना होता है, यथा— प्रस्तावना प्रश्न, बोध प्रश्न, विकासात्मक प्रश्न तथा पुनरावृत्ति के प्रश्न इत्यादि। विद्यार्थी-शिक्षकों के लिए विशिष्ट उद्देश्यों का चयन और लेखन कम चुनौतीपूर्ण नहीं रहता। व्याख्या लिखने में भी विद्यार्थी-शिक्षकों को समस्या आती है। शिक्षण सहायक सामग्री बनाने में तो विद्यार्थी-शिक्षकों को अधिक समय देना पड़ता है।

वस्तुतः शिक्षक-प्रशिक्षण चुनौतीपूर्ण कार्य है, इस प्रशिक्षण के माध्यम से विद्यार्थी-शिक्षक शिक्षण के कार्यकलाप में दक्षता प्राप्त करता है। अभ्यास-शिक्षण से विद्यार्थी-शिक्षक में कौशलों का विकास ही नहीं होता, अपितु जीवन को सफल बनाने वाले विभिन्न तत्वों का भी विकास होता है। इस अवधि में विद्यार्थी-शिक्षक में समय प्रबंधन, कक्षा प्रबंधन, अनुशासन, सहयोग, व्यावहारिकता, समायोजन तथा धैर्य, क्षमा आदि गुण भी विकसित होते हैं। ये विद्यार्थी-शिक्षक विभिन्न विषयों में स्नातक एवं परास्नातक की शिक्षा ग्रहण करने के बाद आते हैं, किंतु जिन विषयों से उनका सामना होता है, वे उनके लिए नवीन होते हैं, जिससे उनके दृष्टिकोण में गुणात्मक परिवर्तन आता है।

शिक्षक अपने विद्यार्थी तथा समाज, दोनों के लिए रोल मॉडल होता है, इसलिए उसके व्यक्तित्व में उन गुणों का समावेश होना अत्यंत आवश्यक है जो उसे एक अच्छा नागरिक बना सकें, साथ ही सामाजिक समस्याओं के समाधान हेतु उच्च स्तर के चिंतन का भी विकास कर सकें। शिक्षक सामाजिक समस्याओं के समाधान हेतु उत्कृष्ट तर्क और विचार प्रस्तुत करता है, जिसके सहयोग से भावी पीढ़ी भविष्य की योजनाओं का निर्माण करती है तथा अपने लिए सुंदर समाज का सृजन करती है। समाज की दिशा और दशा को तय करने का दायित्व भी शिक्षक का ही होता है, वह जिस स्तर तक चिंतनशील होता है, उसी स्तर पर दिशा और दशा भी निर्धारित होती है।

विद्यार्थी-शिक्षकों को अभ्यास-शिक्षण के समय कौशलों के विकास में कठिनाई का सामना करना पड़ता है। मूल समस्या यह होती है कि प्रभावी शिक्षण कैसे किया जाए? प्रभावी शिक्षण के लिए विषय का ज्ञान होना प्रथम शर्त है, शिक्षण के लिए उत्साह और संवेदनशीलता के साथ ही सृजनात्मकता और गुणवत्ता का होना भी आवश्यक है। जब विद्यार्थी-शिक्षक कक्षा में शिक्षण कार्य कर रहा होता है, उस समय उसे एक साथ कई बिंदुओं के मध्य सामंजस्य स्थापित करना पड़ता है, जैसे — कक्षा का प्रबंधन, कक्षा का अनुशासन, विद्यार्थियों के साथ अंत:क्रिया, शिक्षण कौशलों का यथास्थान प्रयोग, विषय ज्ञान, आत्मविश्वास आदि। इन सभी बिंदुओं पर पर्यवेक्षक की टिप्पणी ही प्रकाश डालती है।

अभ्यास-शिक्षण पर पूर्व में हुए शोधों में भार्गव (2009) ने "टीचिंग प्रैक्टिस फ़ॉर स्टूडेंट-टीचर

ऑफ़ बी. एड. प्रोग्राम — इश्यूज़, प्रीडिकामेंट्स एंड सजेशनस्" शीर्षक के अंतर्गत अपने शोध परिणाम में पाया कि भावी शिक्षक बहुआयामी समस्याओं का सामना करते हैं। जिससे शिक्षण कार्य में आवश्यक अनुभव, कौशल और आत्मविश्वास में कमी आ जाती है। पर्यवेक्षकों ने बताया कि जब वे प्रेक्षण का कार्य प्रारंभ करते थे, तब वे सक्रिय हो जाते थे। भावी शिक्षकों ने यह स्वीकार किया कि जब पर्यवेक्षक कक्षा में प्रेक्षण हेतु बैठते थे, तब वे शिक्षण पाठ्य-वस्तु भूल जाते थे और असहज महसूस करते थे।

अहमद और अन्य (2010) ने "टीचिंग प्रैक्टिस— प्रॉब्लम्स एंड इश्यूज़ इन पाकिस्तान" शीर्षक के अंतर्गत अपने शोध परिणाम में पाया कि भावी शिक्षकों को अभ्यास-शिक्षण हेतु विद्यालयों में जाने से पूर्व नियमों और अधिनियमों की निर्देशिका उपलब्ध नहीं कराई जाती। पर्यवेक्षकों द्वारा भी पाठ-योजना की पूर्ण तैयारी नहीं कराई जाती थी तथा उनकी प्रभावी भूमिका, आत्मविश्वास में वृद्धि, दृष्टिकोण तथा दक्षता से संबंधित प्रतिपुष्टि भी नहीं दी जाती थी, जिससे उनका अभ्यास-शिक्षण कार्य प्रभावित होता था।

रंजन (2013) ने "ए स्टडी ऑफ़ प्रैक्टिस टीचिंग प्रोग्राम — ए ट्रांसलेशन फ़ेज़ फ़ॉर स्टूडेंट-टीचर्स" शीर्षक के अंतर्गत अपने शोध परिणाम में पाया कि भावी शिक्षकों का जो अभ्यास-शिक्षण होता है, वह अपर्याप्त है। विशेषतया तब, जब उनकी तैयारी विद्यालयों में होने वाले परीक्षा से पहले कराई जाती है। उस समय विद्यालयों के शिक्षक अपने विद्यार्थियों को लेकर अत्यधिक संकटग्रस्त रहते हैं। अतः इस कारण से वे अपनी कक्षाओं को छोड़ने के प्रति अनिच्छुक होते हैं, उस दशा में भावी शिक्षकों के अभ्यास-शिक्षण का उद्देश्य प्रभावित होता है। भावी शिक्षक सामान्यतया सेवारत सदस्यों द्वारा असम्मान का भाव महसूस करते हैं तथा जब उनको विद्यालयों की विभिन्न गतिविधियों में सम्मिलित होने से मना किया जाता है तो उनका उत्साह भंग हो जाता है। उक्त शोध अध्ययनों के अध्ययन के आधार पर तथा वर्तमान में एन.सी.टी.ई रेग्यूलेशन, 2014 के आधार पर दो वर्षीय पाठ्यक्रम में अभ्यास-शिक्षण की अवधि 16 सप्ताह किए जाने के कारण इस शोध अध्ययन की आवश्यकता प्रतीत हुई।

उद्देश्य

इस शोध अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य थे—

1. बी.एड. विद्यार्थी-शिक्षकों के अभ्यास-शिक्षण के समय पाठ योजना निर्माण में कौशलों के लेखन की समस्या का अध्ययन करना;
2. बी.एड. विद्यार्थी-शिक्षकों के अभ्यास-शिक्षण के समय शिक्षण कौशलों के प्रयोग के समय उत्पन्न समस्या का अध्ययन करना;
3. बी.एड. विद्यार्थी-शिक्षकों के अभ्यास-शिक्षण के समय कक्षा प्रबंधन में उत्पन्न समस्या का अध्ययन करना;
4. बी.एड. विद्यार्थी-शिक्षकों के संपूर्ण अभ्यास शिक्षण अवधि में उत्पन्न सर्वाधिक समस्या का अध्ययन करना;
5. बी.एड. विद्यार्थी-शिक्षकों के संपूर्ण अभ्यास शिक्षण अवधि में अन्य कारकों द्वारा उत्पन्न सर्वाधिक समस्या का अध्ययन करना; तथा
6. बी.एड. विद्यार्थी-शिक्षकों के संपूर्ण अभ्यास शिक्षण अवधि में विद्यालय के कर्मचारियों द्वारा प्राप्त सहयोग का अध्ययन करना।

विधि

इस शोध अध्ययन की प्रकृति सर्वेक्षण थी।

प्रतिदर्श

प्रतिदर्श के रूप में महाराणा प्रताप राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हरदोई (उत्तर प्रदेश) में सत्र 2015–16 में अध्ययनरत बी.एड. के 65 विद्यार्थी-शिक्षकों को सम्मिलित किया गया था। इनका चयन उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्शन विधि से किया गया था।

उपकरण

इस शोध अध्ययन हेतु स्व-निर्मित अभ्यास-शिक्षण सूचना पत्र का प्रयोग किया गया था। उपकरण में छह शिक्षण कौशलों के प्रयोग तथा प्रयोग के समय उत्पन्न होने वाली कठिनाइयों से संबंधित प्रश्न थे, साथ ही शिक्षण के दौरान किस प्रकार की अधिक समस्या आई और किससे अधिक सहयोग प्राप्त हुआ जैसे बिंदुओं को भी सम्मिलित किया गया था। उपकरण में पाठ योजना का निर्माण, शिक्षण अवधि में प्रयुक्त कौशल, कक्षा प्रबंधन के समय समस्या, संपूर्ण शिक्षण अवधि में उत्पन्न समस्या तथा अभ्यास-शिक्षण अवधि में प्राप्त सहयोग को सम्मिलित किया गया था।

आँकड़ों का संकलन

आँकड़ों का संकलन सत्र 2015–16 में महाराणा प्रताप राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हरदोई (उत्तर प्रदेश) के बी. एड. विभाग में अध्ययन कर रहे 65 विद्यार्थी-शिक्षकों पर स्व-निर्मित अभ्यास-शिक्षण सूचना पत्र प्रशासित कर किया गया।

विश्लेषण एवं व्याख्या

उद्देश्य 1 — बी.एड. विद्यार्थी-शिक्षकों के अभ्यास-शिक्षण के समय पाठ योजना निर्माण में कौशलों के लेखन की समस्या के अध्ययन से प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण को सारणी 1 में दिया गया है।

सारणी 1 के आधार पर स्पष्ट है कि पाठ योजना के निर्माण में प्रस्तावना प्रश्न बनाने में सर्वाधिक 58.46 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों को समस्या आई जबकि प्राथमिकता के आधार पर सबसे कम (1.54 प्रतिशत) व्याख्या लिखने में समस्या आई। 16.92 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों को उद्देश्य लेखन में तथा श्यामपट्ट सारांश लेखन में 15.38 प्रतिशत एवं 7.70

सारणी 1— पाठ-योजना निर्माण में कौशलों की समस्या

क्रम संख्या	पाठ योजना निर्माण में कौशलों की समस्या	प्रतिशत
1.	उद्देश्य लेखन में	16.92
2.	प्रस्तावना प्रश्न बनाने में	58.46
3.	व्याख्या लिखने में	1.54
4.	प्रश्न बनाने में	7.70
5.	श्यामपट्ट सारांश लिखने में	15.38
	योग	100.00

प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों को बोध एवं विकास प्रश्न बनाने में समस्याएँ उत्पन्न हुईं। चूँकि किसी भी प्रकरण हेतु प्रस्तावना प्रश्न बनाने में विभिन्न प्रकार की कठिनाइयाँ आती हैं, जैसे — प्रशिक्षक द्वारा विस्तृत चर्चा न कर पाना, विद्यार्थी-शिक्षक द्वारा विषय-वस्तु को न समझ पाना एवं अभ्यास का कम होना हो सकता है। प्रस्तावना के प्रथम प्रश्न को पूर्व ज्ञान से जोड़ना तथा समस्यात्मक प्रश्न का सटीक उत्तर विद्यार्थी से अपेक्षित रहता है, जिसकी अनुपस्थिति व्यापक तैयारी का अभाव हो सकता है।

उद्देश्य 2 — बी.एड. विद्यार्थी-शिक्षकों के अभ्यास-शिक्षण के समय, शिक्षण कौशलों के प्रयोग के समय उत्पन्न समस्या के अध्ययन से प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण सारणी 2 में दिया गया है।

सारणी 2 से स्पष्ट है कि सर्वाधिक (58.46 प्रतिशत) विद्यार्थी-शिक्षकों को प्रकरण निकलवाने में समस्या आई तथा सबसे कम (1.54 प्रतिशत) प्रश्नों को पूछने में समस्या हुई, तत्पश्चात् व्याख्या करने में 3.08 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों को समस्या आई। पुनर्बलन कौशल के प्रयोग में 6.15 प्रतिशत एवं उद्दीपन परिवर्तन में 23.08 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों को सर्वाधिक समस्या आई। श्यामपट्ट कार्य में केवल 7.70 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों को समस्या का सामना करना पड़ा। प्रकरण निकलवाना विद्यार्थी-शिक्षकों के लिए हमेशा चुनौती रहती है जिसका कारण विद्यार्थियों के मानसिक स्तर पर प्रश्नों का निर्माण न होना हो सकता है तथा उद्दीपन परिवर्तन में आने वाली समस्या कौशलों का पर्याप्त अभ्यास न होना और आत्मविश्वास की कमी हो सकती है। भार्गव (2009) ने भी अपने शोध निष्कर्ष में इस ओर संकेत किया है।

उद्देश्य 3 — बी.एड. विद्यार्थी-शिक्षकों के अभ्यास-शिक्षण के समय कक्षा प्रबंधन में उत्पन्न समस्या के अध्ययन से प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण को सारणी 3 में दिया गया है।

सारणी 3 से स्पष्ट है कि कक्षा प्रबंधन में सर्वाधिक (55.38 प्रतिशत) विद्यार्थी-शिक्षकों को विद्यार्थियों से समस्या आई तथा सबसे कम (6.15 प्रतिशत)

सारणी 2 — कौशलों के प्रयोग में सर्वाधिक समस्या

क्रम संख्या	कौशलों के प्रयोग में सर्वाधिक समस्या	प्रतिशत
1.	प्रकरण निकालने में	58.46
2.	व्याख्या करने में	3.08
3.	प्रश्नों को पूछने में	1.54
4.	पुनर्बलन देने में	6.15
5.	उद्दीपन परिवर्तन करने में	23.08
6.	श्यामपट्ट कार्य में	7.70
	योग	100.00

सारणी 3 — कक्षा प्रबंधन में उत्पन्न सर्वाधिक समस्या

क्रम संख्या	कक्षा प्रबंधन में उत्पन्न सर्वाधिक समस्या	प्रतिशत
1.	विद्यार्थियों से	55.38
2.	विद्यालय के शिक्षकों से	7.70
3.	प्रधानाचार्य से	0.00
4.	साथी विद्यार्थी-शिक्षकों से	13.84
5.	पाठयचर्या से	6.15
6.	कक्षा के अंदर की साम्रगी से	16.93
	योग	100.00

पाठ्यचर्या से समस्या हुई, तत्पश्चात् विद्यालय के शिक्षकों से 7.70 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों को समस्या आई। साथी विद्यार्थी-शिक्षकों से 13.84 प्रतिशत एवं कक्षा के अंदर की सामग्री से 16.93 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों को सर्वाधिक समस्या हुई। विद्यालय के प्रधानाचार्य से किसी भी विद्यार्थी-शिक्षक को किसी प्रकार की समस्या का सामना नहीं करना पड़ा। कक्षा प्रबंधन एक कला है, विद्यार्थी-शिक्षक प्रशिक्षण हेतु वास्तविक परिस्थिति में पहली बार किसी कक्षा का सामना कर रहे होते हैं। जिसमें अत्यधिक विभिन्नता रहती है, साथ ही, विद्यालयों का अनुशासनहीन शैक्षिक वातावरण तथा कक्षा में आवश्यक सुविधाओं का अभाव भी इसका एक बड़ा कारण हो सकता है।

उद्देश्य 4 — बी.एड. विद्यार्थी-शिक्षकों के संपूर्ण अभ्यास-शिक्षण अवधि में उत्पन्न सर्वाधिक समस्या के अध्ययन से प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण को सारणी 4 में दिया गया है।

सारणी 4 — संपूर्ण अभ्यास-शिक्षण अवधि में उत्पन्न सर्वाधिक समस्या

क्रम संख्या	संपूर्ण अभ्यास-शिक्षण अवधि में उत्पन्न सर्वाधिक समस्या	प्रतिशत
1.	विषय-वस्तु से	18.45
2.	विद्यार्थियों से	27.69
3.	शिक्षण वातावरण से	23.08
4.	भाषा से	10.77
5.	कौशल के प्रयोग से	7.70
6.	शिक्षण शैली के विकास में	9.23
7.	पर्यवेक्षकों से	3.08
	योग	100.00

सारणी 4 में संपूर्ण अभ्यास-शिक्षण अवधि को स्पष्ट किया गया है, जिसमें सर्वाधिक (27.69 प्रतिशत) विद्यार्थी-शिक्षकों को अभ्यास-शिक्षण के दौरान विद्यार्थियों से समस्या हुई। तत्पश्चात् शिक्षण वातावरण द्वारा 23.08 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों को समस्या आई। विषय-वस्तु से 18.45 प्रतिशत एवं भाषा द्वारा 10.77 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों को सर्वाधिक समस्या हुई। कौशल के प्रयोग में केवल 7.70 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों को समस्या का सामना करना पड़ा, जबकि शिक्षण शैली के विकास में 9.23 प्रतिशत एवं केवल 3.08 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों ने स्वीकार किया कि उन्हें पर्यवेक्षकों द्वारा संपूर्ण अभ्यास-शिक्षण की अवधि में समस्या हुई। संपूर्ण शिक्षण अवधि में विद्यार्थियों द्वारा सर्वाधिक समस्या उत्पन्न की गई इसका कारण विद्यार्थी संपूर्ण सत्र में अपने स्थायी शिक्षक द्वारा पढ़ता है और केवल 20 कार्य दिवसों में वह अनुभवहीन विद्यार्थी-शिक्षकों द्वारा, साथ ही तुलना भी करता है और लगातार कक्षाओं के संचालन से परेशान होकर कक्षा से दूर भागना या फिर विभिन्न प्रकार के क्रियाकलापों द्वारा समस्या उत्पन्न करना हो सकता है।

उद्देश्य 5 — बी.एड. विद्यार्थी-शिक्षकों के संपूर्ण अभ्यास-शिक्षण अवधि में अन्य कारकों द्वारा उत्पन्न सर्वाधिक समस्या के अध्ययन से प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण को सारणी 5 में दिया गया है।

सारणी 5 में शिक्षण के विभिन्न कारकों द्वारा उत्पन्न समस्याओं को प्रदर्शित किया गया है। सर्वाधिक (50.77 प्रतिशत) विद्यार्थी-शिक्षकों को विद्यालय तक पहुँचने में की जाने वाली यात्रा से समस्या आई। तत्पश्चात् विद्यालय की समय-सारणी ने भी 23.08 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों को समस्या उत्पन्न की। आवश्यक सुविधाओं के अभाव से भी 26.15 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षक समस्याग्रस्त रहे। शिक्षण के समय प्रशिक्षण केंद्र यदि दूर है तथा यातायात के साधनों का अभाव है तो इस प्रकार की समस्या स्वाभाविक है, साथ ही, विद्यालय प्रशासन और प्रशिक्षकों में सामंजस्य का अभाव है तो समय-सारणी की भी समस्या आ सकती है। अकसर विद्यालयों में आवश्यक सुविधाओं का अभाव भी इन समस्याओं के कारण होता है।

उद्देश्य 6 — बी.एड. विद्यार्थी-शिक्षकों के संपूर्ण अभ्यास-शिक्षण अवधि में विद्यालय के कर्मचारियों द्वारा प्राप्त सहयोग के अध्ययन से प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण को सारणी 6 में दिया गया है।

सारणी 5 — शिक्षण के अन्य कारकों द्वारा उत्पन्न सर्वाधिक सम्स्या

क्रम संख्या	शिक्षण के अन्य कारकों द्वारा उत्पन्न सर्वाधिक समस्या	प्रतिशत
1.	विद्यालय तक पहुँचने में यात्रा से	50.77
2.	समय-सारणी से	23.08
3.	आवश्यक सुविधाओं के अभाव से	26.15
	योग	100.00

सारणी 6 — अभ्यास-शिक्षण की अवधि में प्राप्त सर्वाधिक सहयोग

क्रम संख्या	अभ्यास-शिक्षण की अवधि में प्राप्त सर्वाधिक सहयोग	प्रतिशत
1.	विद्यालय के कर्मचारियों से	23.08
2.	पर्यवेक्षकों से	38.46
3.	साथी विद्यार्थी-शिक्षकों से	38.46
	योग	100.00

सारणी 6 में अभ्यास-शिक्षण की अवधि में विद्यार्थी-शिक्षकों को मिलने वाले सहयोग का विवरण प्रदर्शित किया गया है। विद्यालय के कर्मचारियों से (23.08 प्रतिशत) विद्यार्थी-शिक्षकों को सहयोग प्राप्त हुआ। 38.46 प्रतिशत विद्यार्थी-शिक्षकों ने स्वीकार किया कि उन्हें पर्यवेक्षकों एवं साथी विद्यार्थी-शिक्षकों से इस अवधि में सहयोग प्राप्त हुआ। प्रशिक्षण की अवधि में साथी विद्यार्थी-शिक्षक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, वे पाठ योजना तैयार कराने में, शिक्षण के समय आत्मविश्वास बढ़ाने में सहयोग करते हैं। पर्यवेक्षक भी अपने विद्यार्थी-शिक्षकों का पर्याप्त सहयोग करते हैं।

निष्कर्ष

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि विद्यार्थी-शिक्षकों को सर्वाधिक समस्या विद्यार्थियों द्वारा ही आती है। साथ ही, शिक्षण वातावरण से भी समस्या उत्पन्न हो रही है। अध्ययन में पाया गया कि शिक्षण कौशलों के ज्ञान का अभाव तथा प्रयोग की पर्याप्त जानकारी का न होना समस्या उत्पन्न करता है। इस समस्या का मुख्य कारण प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षकों की कमी तथा नीतियों में व्यापक समन्वयता का अभाव है। इसका एक अन्य कारण संस्थानों के पास स्वयं के विद्यालय नहीं हैं, जहाँ व्यवस्थित तथा पूर्णकालिक प्रशिक्षण संपन्न कराया जा सके।

सर्वाधिक विद्यार्थी-शिक्षक मानते हैं कि उन्हें प्रस्तावना के प्रश्न बनाने में और प्रकरण निकलवाने में समस्या आती है, यह प्रशिक्षकों एवं प्रशिक्षण संस्थानों के लिए चुनौती है। शिक्षण के आधुनिक उपकरण अनुपलब्ध हैं तथा शिक्षण मशीन, मृदुल उपागम तथा प्रोग्राम इंस्ट्रक्शंस की कमी भी रहती है।

शैक्षिक निहितार्थ

इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि विद्यार्थी-शिक्षकों को प्रस्तावना प्रश्न बनाने में, प्रकरण निकलवाने में, उद्दीपन परिवर्तन करने में सर्वाधिक समस्या उत्पन्न हो रही है, साथ ही कक्षा-कक्ष की परिस्थितियों में विद्यार्थी अधिक समस्या उत्पन्न कर रहे हैं। सभी शिक्षक-प्रशिक्षण संस्थानों के प्रशिक्षक गंभीरतापूर्वक विचार कर उपयोगी शिक्षण कौशलों को तैयार कराने के उपरांत यह सुनिश्चित करें कि विद्यार्थी-शिक्षकों में शिक्षण कार्य के प्रति आत्मविश्वास आ गया है, तब अभ्यास-शिक्षण हेतु भेजें। जिससे वह पूर्ण मनोयोग के साथ शिक्षण कर सकेगा और एक अच्छा शिक्षक बनकर तैयार हो सकेगा।

संदर्भ

बेस्ट, जोन डब्ल्यू और जेम्स कान, बी. 2008. *रिसर्च इन एजुकेशन*. पियर्सन प्रेंटिस हॉल, नयी दिल्ली.

भार्गव, ए. 2009. टीचिंग प्रैक्टिस फ़ॉर स्टूडेंट-टीचर्स ऑफ़ बी.एड. प्रोग्राम — इश्यूज़ प्रीडिकामेंट्स एंड सजेशंस. *तुर्किश ऑनलाइन जर्नल ऑफ़ डिस्टेंस एजुकेशन*. 10(2) : 1–7.

मंगल, एस. के. और उमा मंगल. 2009. *शिक्षा तकनीकी*. पी. एच. आई. लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड, नयी दिल्ली.

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. 2009. *राष्ट्रीय फ़ोकस समूह का आधार पत्र — शिक्षक शिक्षा*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.

सिंह, ए. के. 2005. *मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ*. भारती भवन पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीब्यूटर्स, पटना, बिहार.